सुन्नत को ज़िंदा कीजिये

मुफ्ती तकी उस्मानी [दब]

इस्लाही खुत्बात उर्दू/23 से मजमून का खुलासा लिप्यांतरण किया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

अल्लामा नव्वी (रह) ये बाब काइम किया उस शख्स के बारे में जो कोई अच्छी सुन्नत जारी करे यानी एक वो तरीका जिसका कुरान शरीफ में हदीसो में साहब (रदी) के अमल में दीन का हिस्सा होना साबित है, लेकिन लोगो ने उस पर अमल करना छोड दिया है अब ऐसे मौके पर जब के लोगो ने इस सुन्नत पर अमल करना छोड दिया है कोई शख्स इस सुन्नत पर अमल कर के लोगो के लिए एक मिसाल काइम करता है और दुसरे लोगो को भी इस सुन्नत की तरफ मुतवज्जेह करता है इस अमल की फज़ीलत इस बाब में बयान करना मकसूद है.

कोई अच्छा तरीका जारी करना

इसमे दो किस्म के अमल है एक ये के कोई अच्छा तरीका जारी करना और दुसरे ये के कोई छुटी हुवी सुन्नत को ज़िंदा करना अच्छा तरीका जारी करने का मतलब ये है के एक

अमल था जिसकी तरफ लोगो की तवज्जुह नहीं थी और इस शख्स ने लोगो को इस अमल की तरफ मुतवज्जेह किया इस्के बारे में दो आयते पेश की है (सुरे फुरकान/74)

तर्जुमा – ऐ हमारे परवरदिगार हमारी बीवियों को या हमारे शौहरों को और हमारी औलाद को हमारे लिए आँखों की ठंडक बना यानी जब उनको देखे तो हमारी आँखे ठंडी हो दिल को सुकून मिले आफियत और करार मिले यानी उनको ऐसे अमल की तौफीक आता फार्मा के उनको देख कर हमें सुकून आफियत और करार हासिल हो.

हमारे बीवी बच्चो को इबादत की तौफीक दे दीजिये

बाज़ मुफस्सिरीन ने आँखों की ठंडक के ये मन बयान किये है हम उनको इबादत और टाट में लगा हुवा देखे इसमें दर हकीकत ये दुआ की जा रही है के या अल्लाह हमारी बीवी और बच्चो को इस बात की तौफीक दे दिज्ये के वो आप की इबादत और टाट में लग जाए इस लिए के जब वो इबादत में लग जाएंगे तो हमारी आँखे ठंडी हो जाएंगी.

मुझे मुत्तकियो का इमाम बारह बना दीजये

और इस आयात में दूसरा जुमला इरशाद फरमाया और हमें मुत्तकियो का इमाम बना दिज्ये यहाँ पर इमाम से मुराद सरबराहे खानदान है मतलब ये के हमारे खानदान को मुत्तकी बना दिज्ये और हमें इस खानदान का सरबराह बना दिज्ये इस लिए के बीवी बच्चो वाला शख्स अपने खानदान का सरबराह होता है अब बा-ज़ाहिर तो इस आयात में सरबराह बनने की दुआ मांगी जा रही है और सरबराह बनना तो एक मनसब और ओहदा है और ओहदे और मनसब की तालाब की हदीस में मुमनात की गयी है ऐसा क्यों? जवाब ये है के मुत्तकियो का इमाम आदमी उस वक्त बनेगा जब पहले वो खुद मुत्तकी होगा जब वो मुत्तकी होगा अल्लाह की इबादत करेंगा और गुनाहो से बचेगा तो उसको देख कर उसके घर वाले भी उसकी पैरवी करेंगे इस सूरत में उसको उसके अमल का भी सवाब मिलेंगा और उसके घर वाले जो नेक अमल करेंगे उसका सवाब भी उसको मिलेंगा इसी वजह से इस आयत को इस बाब के तहत

लाए के जो शख्स अच्छी सुन्नत जारी करे इसकी इस आयत में दुआ कराइ गयी के या अल्लाह हम अपने बीवी बच्चो के लिए अच्छी सुन्नत जारी करे और फिर तकवा में उनके सरबराह बन जाये.

जो शख्स अच्छी सुन्नत जारी करेंगा

उसके बाद नबी करीमﷺ ने इरशाद फरमाया जो शख्स इस्लाम में कोई अच्छी सुन्नत जारी करेंगा तो इसको खुद अपने अमल का भी सवाब मिलेंगा और उसके बाद जितने लोग इस नेक अमल पर लगेंगे उन सब लोगो का अजर भी इस शख्स को मिलेंगा इस तरह के उन लोगो के अजर में कोई कमी नहीं आएगी मान ले के एक शख्स ने एक नई सुन्नत जारी की इसको देख कर १००० लोगो ने वही नेक अमल किया तो इन १००० लोगो के सवाब में कोई कमी नहीं आएगी और जिस शख्स ने इनको रास्ता दिखाया इसको १००० आदमियों के अमल के बराबर सवाब मिलेंगा.

जो शख्स बुरा [गलत] तरीका जारी करेंगा

उसके विपरीत [अपोजिट] अगले जुमले में नबी करीमﷺ ने

इरशाद फरमाया जो शख्स कोई बुरा तरीका जारी करेंगा तो इसको खुद अपनी बुराई का गुनाह मिलेंगा और इसको देख कर जितने लोगो ने बुराई इख्तियार की उन सब का गुनाह भी पहले वाले शख्स के नामाए अमल में लिखा जाएगा और उनके गुनाहो में कोई कमी नहीं की जाएगी, क्यों के इस बुराई को सब से पहले इस ने ईजाद किया और जारी किया था.

हर कत्ल का गुनाह काबिल को भी मिलेंगा

इस्सी वजह से कुरान शरीफ और हदीस में ये बात मौजूद है के दुन्या में जितने भी कत्ल हुवे है उन सब के गुनाह उस शख्स को मिलेंगा जिसने सब से पहले इस दुन्या में कत्ल का तरीका ईजाद किया था यानी हज़रात आदम (रह) का बेटा काबिल जिसने सब से पहले इस दुन्या में कत्ल किया क्यों के उस से पहले कतल करने का कोई तसव्वुर मौजूद नहीं था.

इसलिए कुरान शरीफ में अल्लाह ने इरशाद फरमाया (सुरे मैदाह/३२) तर्जुमा - जो शख्स एक इंसान को नहक कतल करता है तो गोया उसने सारी इंसानियत को कतल कर दिया लिहाज़ा किसी बुरे अमल को जारी करने का वबाल इतना

सख्त है के उसके बाद कयामत तक जो शख्स भी उस अमल को करेंगा उसका गुनाह इस जारी करने वाले के नामाए अमल में भी लिखा जाएगा.

इसको १०० शहीदों का अज़ार मिलेंगा

एक और हदीस में बडी खुशखबरी का इरशाद नबी करीमﷺ ने फरमाया मेरी वो सुन्नत जो मुर्दा हो गयी हो मुर्दा होने का मतलब ये है के लोगो ने उस पर अमल करना छोड दिया हो अगर कोई अल्लाह का बंदा इस मुर्दा सुन्नत को ज़िंदा करदे तो इस ज़िंदा करने वाले को १०० शहीदों के बराबर अज़रो सवाब मिलेंगा.

हम नेक अमल कैसे करे?

ये हदीस हमारे इस दौर में हमारे लिए बडी तसल्ली का सामान है और बडी फज़ीलत और बशारत का ज़रिए है क्यों के हर महफिल में ये बात सुनने में आती है साहब हम क्या करे? माहौल ऐसा खराब हो गया है और मुआशरा ऐसा खराब हो गया है इस माहौल और मुआशरे में कोई शख्स भी ये काम नहीं कर सकता हम ये काम कैसे करे? कोई शख्स भी हमारे

इस माहौल और मुआशरे में नमाज़ नहीं पढता दाढी नहीं रखता कुरान शरीफ नहीं पढता दीनी तालीम नहीं हासिल करता गुनाहो से नहीं बचता हम कैसे ये काम करे? जगह जगह ये उज़ार सुनने में आते है.

दुन्या वालो के ताने की परवाह मत करो.

नबी करीमﷺ १४०० साल पहले बता गए है अगर कोई और ये अमल नहीं करता तो फिर तो तुम्हारे लिए तो ये लूट का ज़माना है पहले ही से अगर लोग उस पर अमल कर रहे होते तो इस पर वो अजरो सवाब नहीं मिलता जो अजरो सवाब आज तुम्हे मिल रहा है.

इसलिए जब तुम किसी सुन्नत को ज़िंदा करने की तरफ कदम बढाओगे तो कोई ताना देने वाला तुम को ताना भी देगा मज़ाक भी उडाएगा दकया-नूस (बैकवर्ड) भी कहेगा लेकिन याद रखो वो कहने वाला जो कुछ भी कहेगा वो तो हवा में उड जायेगा और दुन्या में कोई भी आदमी ऐसा नहीं होगा जिसने किसी की ज़बान से कोई ताना न सुना हो.

इसलिए के दुन्या वालो की ज़बान को कोई नहीं रोक सकता

अगर तुम इन दुन्या वालो की मर्ज़ी और ख्वाहिश के मुताबिक भी ज़िन्दगी गुजरोगे तो इस बात की कोई गारंटी नहीं के वो फिर भी तुम्हे ताने न दे फिर भी वो तुम्हे ताने देंगे अल-बत्ता फरक ये होगा के अब वो ताने अल्लाह और रसूल की वजह से मिल रहे है और जब कोई मुस्लमान अल्लाह के हुकम पर अमल करने के लिए और नबी करीमﷺ की सुन्नत को ज़िंदा करने के लिए ताना बर्दाश्त करता है तो इस ताने के अजरो सवाब और फज़ीलत का आप अंदाज़ा नहीं कर सकते.

ये वो ताना है जो तमाम पैगम्बरो को दिया गया कोई नबी दुन्या में ऐसा नहीं आया जिसको ताने न दिए गए हो तमाम नबियो को ताने दिए गए किसी ने मजनूं कहा किसी ने जादूगर कहा किसी ने कुछ किसी ने कुछ कहा लिहाज़ा अगर तुम को नबी करीमﷺ की किसी सुन्नत को ज़िंदा करने की वजह से ताना मिल रहा है तो ये तो तुम्हारे गले का ज़ेवर है इस पर फखर करो और इस पर खुश हो जावो के अल्लाह और उसके रसूल की खातिर ये ताना मिल रहा है.

ये ताने तुम्हारे गले का ज़ेवर है

आज अगर कोई शख्स आम तरजे ज़िन्दगी से हटकर एक रास्ता इख्तियार करता है यानी दीन का रास्ता इख्तियार करता है मसलन उसने तय कर लिया के आइंदा में मस्जिद में जमात के साथ नमाज़ अदा, करूँगा झूठ नहीं बोलूंगा, रिश्वत नहीं दूंगा और इसने अपनी ज़ाहिरी शकल भी सुन्नत के मुताबिक बना ली लेकिन इसका नतीजा ये होता है के इस पर तानो की बौछाड हो गयी कोई कह रहा है के मौलवी साहब जा रहे है कोई सूफी कह रहा है कोई कुछ कोई कुछ कह रहा है ये क्या तुम २०वी सदी में ये तरीका निकल कर चल पडे हो? सारी दुन्या किसी और रास्ते पर जा रही है और तुम किसी और रास्ते पर जा रहे हो खूब समाज लो इन में से एक-एक ताना तुम्हारे लिए करोड रूपये से बेहतर है इसलिए के इन तानो की वजह से १०० शहीदों का सवाब तुम्हारे नामाए अमल में लिखा जा रहा है.

५० आदमियों के अमल के बराबर सवाब.

बहरहाल किसी सुन्नत को ज़िंदा करना ये मामूली बात नहीं इसलिए एक हदीस में नबी करीमﷺ ने सहावा (रदी) से

खिताब करते हुवे फरमाया के आखरी दौर में एक ज़माना ऐसा आएगा इसमें एक आदमी जो नेक अमल करेंगा इसको ५० आदमियों के बराबर सवाब मिलेंगा.

मसलन एक नमाज़ पढी तो इसको ५० नमाज़ो के बराबर सवाब मिलेंगा एक रोज़ा रखा तो ५० रोज़ो के बराबर सवाब मिलेंगा सहबा (रदी) पर कुर्बान जाइये उन्होंने ने कोई बात अधूरी नहीं छोडी चुनांचे नबी करीमﷺ से उसी वक्त पूछ लिया वो ५० आदमी उस खराब दौर के मुराद है या इस हमारे दौर के ५० आदमी मुराद है? जवाब में नबी करीमﷺ ने फरमाया उस ज़माने के नहीं बल्कि तुम्हारे ज़माने के ५० आदमियों का सवाब मिलेंगा. (तिर्मिज़ी ३०५८)

लिहाज़ा किसी ताना देने वाले के ताना देने की बिलकुल परवा मत करो अम्बिया (अल) की सुन्नत यही है के तुम दूसरो के तानो की बिलकुल परवा मत करो बस अपना काम सुन्नत के मुताबिक करते जावो.

अल्लाह हम सब को नबी करीमﷺ की सुन्नतों पर अमल करने वाला और इन सुन्नतों को ज़िंदा करने वाला बना दे आमीन.